SANTHAL AND THEIR GREAT REVOLT OF 1855

- **Santhal Revolution (1855-56)**
  - Continued oppression of the Santhals (an agricultural people) by Non - tribals aided by british colonial administration and their local agents like local zamindars and Daroghas led to the Santhal rebellion.
  - **Areas**: It took place in 1855 in Bhognadih village in present-day Jharkhand and also around foothills of Rajmahal hills in what was demarcated as santhal paraganas.
  - **Reason for the revolt:**
    - The seeds of the revolt were sown in 1832 when the East India Company created Damin-i-koh region in the forested belt of Rajmahal hills, and invited the Santhals to settle there.
    - Over the years, Santhals found themselves at the receiving end of exploitative practices aided by the British.
- **Phases of Revolt :** The Great revolt is preceded by many acts of violence against money lenders and Zamindars, which was easily suppressed by Britishers.
- However, it was in 1855, when 10,000 strong force of santhals under leadership of sido and kanhu met at Baghnadihi that exact nature of resentment and resolve to finish of the exploitative system, became known to all.
- Britishers able to suppress the revolt in 1856 with help of huge force, killing more than 10,000 to 15,000 santhals and destroying thousands of homes and villages.
  - **Leaders:** Kanho Murmu, Chand Murmu, Bhairab Murmu.

- **Impact of Rebellion :**
  1. **Organized movement:**
     The Santhal uprising was an organized movement with good leadership qualities. In a short period of time, it was successful in uniting about 60,000 people. If we look at the other spontaneous movement of that time, we find that none of the movements was that well arranged as the Santhal revolt. The unity of the Santhals shook the nerve of the Britishers.
  2. **Use of weapons:**
     The Santhal used bows and arrows against the weapons and artillery used by the Britishers. It was seen that Santhal was well prepared to fight against the Britishers, even though it was not sufficient for the Santhals' victory. They were well prepared for the war in their own way. They used guerilla tactics, which was a new occurrence for Bihar to fight against the Britishers.
  3. **Trained leadership:**
     The prominent leaders of the war, Sidhu, and Kanhu in a short span of time was successful in mobilizing a huge number of people to fight against the cause. They fought violently against the British and local British administrators sheltered themselves in the fortification in a town of Santhal Parganas to save their lives.
  4. **Blow on British powers:**
     The Santhal rebellion was a blow on the British powers. It was such a fiercest movement that Britishers had to implement martial law to quell the powers of Santhals.
  5. **Growth of Revolutionary Nationalism:**
     The Santhal revolt fostered a sense of unity among the Santhal tribes. It was seen as the beginning of larger wars to free the people from the oppressive British rule.
  6. **Growth of Self Respect and self-confidence:**
     It was seen that with few resources at hand, Santhal was heading to fight a war with the Britishers. It is also said that Britishers were terrified by the spirit of unity portrayed by the tribal people, that it decided to keep them aloof from the public. After the Santhal rebellion, people understood that they can drive out the Britishers even with fewer resources at hand.
  7. **Identity of the tribal people:**
     The Santhal rebellion gave birth to the modern Santhal identity. It was responsible for the creation of the present state of Jharkhand. It gave hope for the tribal people to protect their culture and tradition from any kind of destruction.

unacademy

संथाल और उनका 1855 का महान विद्रोह

- **संथाल क्रांति (1855-56)**
  - गैर-आदिवासियों द्वारा ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन और उनके स्थानीय एजेंटों जैसे स्थानीय जमींदारों और दरोगाओं द्वारा सहायता प्राप्त संथालों (एक कृषि लोगों) के निरंतर उत्पीड़न ने संथाल विद्रोह को जन्म दिया।
  - **क्षेत्र:** यह 1855 में वर्तमान झारखंड के भोगनाडीह गाँव में और राजमहल पहाड़ियों की तलहटी के आसपास भी हुआ था, जिसे संथाल परगना के रूप में सीमांकित किया गया था।
  - **विद्रोह का कारण:**
    - विद्रोह के बीज 1832 में बोए गए जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजमहल पहाड़ियों के वन क्षेत्र में दामिन-ए-कोह क्षेत्र बनाया और संथालों को वहां बसने के लिए आमंत्रित किया।
    - वर्षों से, संथालों का अंग्रेजों द्वारा शोषण किया गया।
- **विद्रोह के चरण:** महान विद्रोह साहूकारों और जमींदारों के खिलाफ हिंसा के कई कृत्यों से पहले होता है, जिसे अंग्रेजों ने आसानी से दबा दिया था।
- हालाँकि, यह 1855 में हुआ था, जब सिदो और कान्हू के नेतृत्व में 10,000 संथालों की मजबूत सेना बगनाडीही में मिली थी, जो कि शोषणकारी व्यवस्था को खत्म करने के लिए आक्रोश और संकल्प सार्वजनिक हुआ।
- अंग्रेज़ों ने 1856 में विशाल बल की मदद से विद्रोह को दबाने में सक्षम थे। उन्होंने 10,000 से 15,000 से अधिक संथालों को मार डाला और हजारों घरों और गांवों को नष्ट कर दिया।
  - **नेता:** कान्हो मुर्मू, चांद मुर्मू, भैरब मुर्मू।

- **विद्रोह का प्रभाव :**
  1. **संगठित आंदोलन:**
     संथाल विद्रोह अच्छे नेतृत्व गुणों वाला एक संगठित आंदोलन था। बहुत कम समय में यह लगभग 60,000 लोगों को एक करने में सफल रहा। यदि हम उस समय के अन्य स्वतःस्फूर्त आंदोलन को देखें, तो हम पाते हैं कि कोई भी आंदोलन संथाल विद्रोह के रूप में व्यवस्थित नहीं था। संथालों की एकता ने अंग्रेजों की नसों को झकझोर कर रख दिया।
  2. **हथियारों का प्रयोग:**
     संथाल ने अंग्रेजों द्वारा इस्तेमाल किए गए हथियारों और तोपखाने के खिलाफ धनुष और तीर का इस्तेमाल किया। यह देखा गया कि संथाल समूह अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए अच्छी तरह से तैयार था, भले ही यह संथालों की जीत के लिए पर्याप्त नहीं था। वे अपने तरीके से युद्ध के लिए अच्छी तरह तैयार थे। उन्होंने छापामार रणनीति का इस्तेमाल किया, जो बिहार के लिए अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए एक नई घटना थी।
  3. **प्रशिक्षित नेतृत्व:**
     युद्ध के प्रमुख नेता, सिद्धू और कान्हू कम समय में बड़ी संख्या में लोगों को शोषक व्यवस्था के खिलाफ लड़ने के लिए जुटाने में सफल रहे। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ हिंसक लड़ाई लड़ी और स्थानीय ब्रिटिश प्रशासकों ने अपनी जान बचाने के लिए संथाल परगना के एक शहर में किलेबंदी में शरण ली।
  4. **ब्रिटिश शक्तियों पर प्रहार:**
     संथाल विद्रोह ब्रिटिश शक्तियों पर एक आघात था। यह इतना उग्र आंदोलन था कि संथालों की शक्तियों को कुचलने के लिए अंग्रेजों को मार्शल लॉ लागू करना पड़ा।
  5. **क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का विकास:**
     संथाल विद्रोह ने संथाल जनजातियों के बीच एकता की भावना को बढ़ावा दिया। इसे लोगों को दमनकारी ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के लिए बड़े युद्धों की शुरुआत के रूप में देखा गया।
  6. **आत्म सम्मान और आत्मविश्वास की वृद्धि:**
     यह देखा गया कि हाथ में कुछ संसाधनों के साथ, संथाल अंग्रेजों के साथ युद्ध लड़ने के लिए जा रहा था। वे इतने उग्र थे कि इस आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजों को भारी साधनों का सहारा लेना पड़ा। यह भी कहा जाता है कि आदिवासी लोगों द्वारा चित्रित एकता की भावना से अंग्रेज भयभीत थे, कि उन्होंने उन्हें जनता से अलग रखने का फैसला किया। संथाल विद्रोह के बाद, लोगों ने समझा कि वे कम संसाधनों के साथ भी अंग्रेजों को खदेड़ सकते हैं।
  7. **आदिवासी लोगों की पहचान:**
     संथाल विद्रोह ने आधुनिक संथाल पहचान को जन्म दिया। यह झारखंड के वर्तमान राज्य के निर्माण के लिए जिम्मेदार था। इसने जनजातीय लोगों को अपनी संस्कृति और परंपरा को किसी भी प्रकार के विनाश और हस्तक्षेप से बचाने के लिए प्रोत्साहित किया।